शिक्षण के सामान्य सिद्धान्तों का विस्तृत रूप से वर्णन कीजिए।

Describe the General Principles Teaching in detailed.

शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त इस प्रकार है–

1. **क्रियाशीलता का सिद्धान्त–** बालक में शारीरिक और मानसिक क्रियाशीलता अधिक पायी जाती है। क्रियाशीलता के सिद्धान्त को प्रमुखता देने के कारण उनकी शिक्षण विधियों, जैसे प्रोजेक्ट, माण्टेसरी किंडरगार्टन आदि का प्रचलन हुआ। रायबर्न ने इस सिद्धान्त को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया है।
2. **प्रेरणा का सिद्धान्त–** यदि बालक को किसी कार्य को सीखने के लिये प्रेरित किया जाता है, तो सीखने का काम आसान हो जाता है।
3. **रूचि का सिद्धान्त–** इस सिद्धान्त से आशय यह है कि जब बालक की किसी पाठ के प्रति रूचि उत्पन्न हो जाती है, तो उसके लिये उपयोगी है।
4. **चयन का सिद्धान्त–**शिक्षक को उस ज्ञान का चयन करना चाहियें जो बालक के लिये उपयोगी है।
5. **नियोजन का सिद्धान्त–** इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षक कों अपना शिक्षण कार्य प्रारम्भ करने से पहले नियोजन कर लेना चाहिये।
6. **वैयक्तिक विभिन्निताओं का सिद्धान्तः–** सभी बालक बुद्धि, योग्यता, क्षमता और अभिरूचि में समान नही होते है इस कारण यह आवश्यक है कि शिक्षक शिक्षण कार्य करते समय बच्चों की वैयक्तिक विभिन्निताओं को ध्यान में रखे।
7. **विभाजन का सिद्धान्त–** शिक्षक को अपना पाठ पढाने से पूर्व सुविधानुसार उसे विभिन्न सोपानों में विभाजित कर लेना चाहिए।
8. **आवृति का सिद्धान्त–** इस सिद्धान्त से आशय है कि शिक्षक को अपना पाठ पढाने से पूर्व सुविधानुसार उसे विभिन्न सोपानों में विभाजित कर लेना चाहिए।
9. **निर्माण एवं मनोरंजन का सिद्धांत–**छात्रों से जो क्रियाएं सम्पन्न कराई जाएं वे रचनात्मक होनी चाहिए उससे छात्रों का किसी न किसी तरह का मनोरजंन होता है।

Scanned with CamScanner

शिक्षण सूत्र से क्या अभिप्राय है? सामाजिक अध्ययन विषय के अध्यापक को अपने विषय के शिक्षण में किन शिक्षण सूत्र को महत्व देना चाहिए।

What are teaching Maxims? A Social Study Teacher should gives importance to which Teaching Maxims.

शिक्षण की प्रक्रिया में व्याप्त जटिलताओं को दूर करने के लिये शिक्षा–शास्त्रियों ने समय समय पर अनेक उक्तियों, तथ्यों को खोजा जिनसे शिक्षण कार्य अधिक सरल और रोचक बन जाता है। उन तथ्यों को शिक्षण सूत्र कहा जाता है।

इस प्रकार शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु निम्नांकित शिक्षण सूत्र का उल्लेख किया है–

1. **ज्ञात से अज्ञात की ओर–** बालक अपने पूर्व ज्ञान के आधार बालक के सामने नई विषय वस्तु, प्रस्तुत करने से पूर्व इस बात का पता लगावे कि बालक को उस पाठ के बारें में प्रारम्भिक ज्ञान कितना है उस ज्ञान को आधार मानकर नवीन विषयवस्तु का ज्ञान प्रदान करना चाहिए।
2. **सरल से जटिल की ओर–** पाठ्यवस्तु के सरल भागों का पता लगाना इसके पश्चात् धीरे–धीरे विषय वस्तु के जटिल भागों को प्रस्तुत कर पाठ का विकास करना चाहिए।
3. **सरल से कठिन की ओर–** जिस पाठ्यवस्तु में मानसिक प्रक्रिया सरल हो उसे प्रस्तुत किया जाना चाहिए और गूढ व कठिन मानसिक क्रियाओं वाले अंश उत्तरोत्तर प्रस्तुत किये जाने चाहिए।

4. **स्थूल से सूक्ष्म की ओर–** कोई सूक्ष्म विचार बताने से पहले कोई स्थूल विचार बताएं जो शैक्षणिक दृष्टि से उपयोगी हो, इसमें बालकों की रूचि, भावना तथा विचारों के साथ तात्कालिक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। **हरबर्ट स्पेन्सर** ने कहा है कि– "पहले पाठ स्थूल वस्तुओं से प्रारम्भ होने चाहिये और सूक्ष्म बातों में समाप्त होना चाहियें"।
5. **विशेष से सामान्य की ओर–**इसमें पाठ्यवस्तु की विशेष बाते पहले रखी जाती है उनके आधार पर सामान्य नियमों का निरूपण कर शिक्षण किया जाता है।
6. **अधिगम अनुभव से तर्क की ओर–** बालक के अनुभव को आधार बना कर निरीक्षण व परीक्षण द्वारा उनकी तर्क शक्तियों का विकास इस सूत्र द्वारा किया जाता है।
7. **पूर्ण से अंश की ओर –** पूर्ण पाठ्यवस्तु या तथ्य को एक साथ प्रस्तुत कर धीरे धीरे उसके अंशों के ज्ञान की ओर अग्रसर होना ही इस सूत्र का उद्देश्य है।
8. **अनिश्चित से निश्चित की ओर–**कई विषयों से बालक के मस्तिष्क में अनिश्चित या अस्पष्ट जानकारी होती है अध्यापक इसकी जानकारी कर उसके अनिश्चित विचारों को जब निश्चित आधार प्रस्तुत करता है तो उसका ज्ञान परिपक्व हो जाता है।
9. **विश्लेषण से संश्लेषण की ओर–** जटिल समस्या को सुलझानें में या जटिल विषय को समझाने में अध्यापक को उसके तत्वों का विश्लेषण करना आवश्यक होता है इन तत्वों को समझ लेने पर सश्लिष्ट

Scanned with CamScanner